कथा सरिता

अछूत व्यक्ति

एक दिन गौतम बुद्ध अपने शिष्यों के साथ एकदम शांत बैठे हुए थे। उन्हें इस प्रकार बैठे हुए देख उनके शिष्य चिंतित हुए कि कहीं वे अस्वस्थ तो नहीं हैं। एक शिष्य ने उनसे पूछा कि आज वह मौन क्यों बैठे हैं? क्या शिष्यों से कोई गलती हो गई है? इसी बीच एक अन्य शिष्य से पूछा कि क्या वह अस्वस्थ हैं? पर बुद्ध मौन रहे। तभी कुछ दूर खड़ा व्यक्ति ज़ोर से चिल्लाया, "आज मुझे सभा में बैठने की अनुमति क्यों नहीं दी गई है?" बुद्ध आँखें बंद करके ध्यान मग्न हो गए। वह व्यक्ति फिर से चिल्लाया, "मुझे प्रवेश की अनुमति क्यों नहीं मिली?" इस बीच एक उदार शिष्य ने उसका पक्ष लेते हुए कहा कि उसे सभा में आने की अनुमति प्रदान की जाये। बुद्ध ने आँखें खोली और बोले, "नहीं, वह अछूत है, उसे आज्ञा नहीं दी जा सकती।" यह सुन शिष्यों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

इस पर कई शिष्य बोले कि "हमारे धर्म में तो जात-पात का कोई भेद ही नहीं, फिर वह अछूत कैसे हो गया?" तब बुद्ध ने समझाया, "आज वह क्रोधित होकर आया है। क्रोध से जीवन की एकाग्रता भंग होती है। क्रोधी व्यक्ति प्रायः मानसिक हिंसा कर बैठता है। इसलिए वह जब तक क्रोध में रहता है, तब तक वह अछूत होता है। इसलिए उसे कुछ समय एकांत में ही खड़े रहना चाहिए।"

क्रोधित शिष्य भी बुद्ध की बातें सुन रहा था, पश्चाताप की अग्नि में तपकर वह समझ चुका था कि अहिंसा ही महान कर्त्तव्य व परम धर्म है। वह बुद्ध के चरणों में गिर पड़ा और कभी क्रोध न करने की शपथ ली।

पुरानी पेंटिंग

बहुत समय पहले की बात है। उन्नीसवीं सदी के मशहूर पेंटर दांते गेब्रियल रोजेटी के पास एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति आ पहुंचा। उसके पास कुछ स्केच और ड्रॉइंग्स थी जो रोजेटी को दिखाकर उनकी राय जानना चाहता था कि वे अच्छी हैं या कम से कम उन्हें देखकर कलाकार में कुछ टैलेंट जान पड़ता है या नहीं। रोजेटी ने ध्यान से उन ड्रॉइंग्स को देखा, वह जल्द ही समझ गया कि वे किसी काम की नहीं हैं। और उसे बनाने वाले में नहीं के बराबर आर्टिस्टिक टैलेंट है। वे उस व्यक्ति को दुःखी नहीं करना चाहते थे, पर साथ ही वो झूठ भी नहीं बोल सकते थे इसलिए उन्होंने बड़ी सज्जनता से उसे कह दिया कि इन ड्रॉइंग्स में कोई खास बात नहीं है। उनकी बात सुनकर व्यक्ति थोड़ा निराश हुआ, लेकिन शायद वो पहले से ही ऐसी उम्मीद कर रहा था। उसने रोजेटी से उनका समय लेने के लिए माफी मांगी और अनुरोध किया कि यदि संभव हो तो वे एक यंग आर्ट स्टूडेंट के द्वारा बनायी कुछ पुरानी पेंटिंग्स भी देख लें। रोजेटी तुरन्त तैयार हो गये, और एक पुरानी फाइल में लगी कृतियाँ देखने लगे। उन्होंने अपनी खुशी ज़ाहिर करते हुए कहा, "वाह, ये पेंटिंग्स तो बड़ी अच्छी हैं, इस नौजवान में बहुत टैलेंट है। उसे हर तरह का प्रोत्साहन दीजिये, यदि वह इस काम में लगा रहता है और जी तोड़ मेहनत करता है, तो कोई शक नहीं कि एक दिन वो महान पेंटर बनेगा।"

रोजेटी की बात सुनकर उस व्यक्ति की आँखें भर आयीं। कौन है यह नौजवान? रोजेटी ने पूछा, "तुम्हारा बेटा?" नहीं, ये मैं ही हूँ। तीस साल पहले का मैं। काश उस समय किसी ने आपकी तरह प्रोत्साहित किया होता तो आज मैं पछताने की जगह एक खुशहाल ज़िन्दगी जी रहा होता।

संसार को चलाने वाला

एक घर के मुखिया को यह अभिमान हो गया कि उसके बिना, उसके परिवार का काम नहीं चल सकता। उसकी छोटी सी दुकान थी। उससे जो आय होती थी, उसी से उसके परिवार का गुज़ारा चलता था। चूंकि कमाने वाला वह अकेला ही था इसलिए उसे लगता था कि उसके बगैर कुछ नहीं हो सकता। वह लोगों के सामने डींगें हांका करता था।

एक दिन वह एक संत के सत्संग में पहुंचा। संत कह रहे थे, दुनिया में किसी के बिना किसी का काम नहीं रुकता। यह अभिमान व्यर्थ है कि मेरे बिना परिवार या समाज ठहर जाएगा। सभी को अपने भाग्य के अनुसार प्राप्त होता है। सत्संग समाप्त होने के पश्चात् मुखिया ने संत से कहा, "मैं दिन भर कमाकर जो पैसे लाता हूँ, उसी से मेरे घर का खर्च चलता है। मेरे बिना तो मेरे परिवार के लोग भूखे मर जाएंगे।" संत बोले, "यह तुम्हारा भ्रम है। हर कोई अपने भाग्य का खाता है।" इस पर मुखिया ने कहा, "आप इसे प्रमाणित कर के दिखाइए।" संत ने कहा, "ठीक है, तुम बिना किसी को बताए घर से एक महीने के लिए गायब हो जाओ। उसने ऐसा ही किया। संत ने यह बात फैला दी कि उसे बाघ ने खा लिया है। मुखिया के परिवार वालों ने कई दिनों तक शोक मनाया। गांव वाले आखिरकार उनकी मदद के लिए सामने आए। एक सेठ ने उसके बड़े लड़के को अपने यहाँ नौकरी दे दी। गांव वालों ने मिलकर लड़की की शादी कर दी। एक व्यक्ति छोटे बेटे की पढ़ाई का खर्च देने को तैयार हो गया। एक महीने बाद मुखिया छिपता-छिपाता रात के वक्त अपने घर आया। घर वालों ने भूत समझकर दरवाज़ा नहीं खोला। जब वह बहुत गिड़गिड़ाया और उसने सारी बातें बताईं तो उसकी पत्नी ने दरवाज़े के भीतर से ही उत्तर दिया कि अब हमें तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। अब हम पहले से ज़्यादा सुखी हैं। उस व्यक्ति का सारा अभिमान चूर-चूर हो गया।

भावार्थ - संसार किसी के लिए भी नहीं रुकता...यहाँ सभी के बिना काम चल सकता है। क्योंकि इस संसार को चलाने वाले हम नहीं, स्वयं परमात्मा है।

सीतापुर-उ.प्र.। सांसद बनने से पूर्व राजेश वर्मा के सेवाकेन्द्र में आगमन पर ज्ञानचर्चा करने एवं उन्हें विजयी होने की शुभकामनायें देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. योगेश्वरी।

गया-ए.पी. कॉलोनी(बिहार)। बुद्ध पूर्णिमा के उपलक्ष्य पर बोध गया टेम्पल मैनेजमेंट कमेटी द्वारा आयोजित 2563वें त्रिदिवसीय बुद्ध जयंती महोत्सव पर गौतम बुद्ध के समक्ष पुष्प अर्पित करते हुए ब्र.कु. सुनीता, प्रणव भंते, ब्र.कु. रूपम तथा अन्य भंते।

झालावाड़-राज.। अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस पर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए यूनियन नर्सेज़ जिला अध्यक्ष आरिफ जी, नर्सिंग ट्यूटर कमलेश जी, महिला यूनियन नर्सेज़ जिलाध्यक्ष खुशीला खान, एन.एम. श्यामा तथा ब्र.कु. मीना।

कलायत-हरियाणा। पंजाब केसरी के वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप मित्तल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपक,माउंट आबू। साथ हैं ब्र.कु. रेखा तथा ब्र.कु. अजीत।

नेपाल-रूपनी। नवनिर्मित ओमशांति भवन के उद्घाटन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए मेयर हरेराम यादव, राष्ट्रीय जनता पार्टी के केंद्रीय सदस्य दिनेश यादव, ब्र.कु. गिरीश,माउंट आबू, ब्र.कु. भगवती, ब्र.कु. नीतू तथा अन्य।

फरीदाबाद-हरियाणा। लुधियाना के पंजाबी भवन में ऑल इंडिया पी.एन.बी. ऑफिसर्स एसोसिएशन द्वारा पी.एन.बी. बैंक ऑफीसर्स के लिए आयोजित कार्यक्रम में 'पॉज़ीटिव थिंकिंग फॉर इमोशनल फिटनेस एंड कॉन्सनट्रेशन' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् ब्र.कु. मिनाक्षी लोकल ब्रांच डायरेक्टर अशोक अरोड़ा को ईश्वरीय सौगात देते हुए।

पटियाला-पंजाब। आध्यात्मिक कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए पन्नु जी,पूर्व जिला गवर्नर,रोटरी क्लब, कर्मिन्दर सिंह,सीईओ,सोसायटी इन वेलफेयर ऑफ हैंडीकैप्ड, अशोक शर्मा,सीईओ,ए-वन पंजाबी चैनल, प्रदीप नन्दा,फाउण्डर,जेंट्स क्लब, मन्जू शर्मा,प्रधान,काली माता लंगर कमेटी, चरणजीत सिंह रखड़ा,सदस्य,अकाली दल तथा धालीवाल जी,पी.पी.एस.।